International Journal of Applied Research 2022; 8(4): 311-314

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(4): 311-314
www.allresearchjournal.com
Received: 07-01-2022
Accepted: 09-02-2022

डॉ. सन्तोष कुमार द्विवेदी
ज्योत्सना शिक्षा महाविद्यालय,
सीधी, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. सन्तोष कुमार द्विवेदी
ज्योत्सना शिक्षा महाविद्यालय,
सीधी, मध्य प्रदेश, भारत

सीधी जिले में कोविड–19 के समय स्कूली छात्राओं में शिक्षा का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. सन्तोष कुमार द्विवेदी

सारांश
लॉकडाउन की वजह से बच्चों की शिक्षा से जुड़े नुकसान का आंकलन करने के लिए सीधी जिले में स्कूली छात्राओं पर कारोना का प्रतिकूल प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन पर पाया गया कि कोरोना के बीच स्कूल बंद होने से बच्चों ने पछिली कक्षाओं में जो सीखा था वो उसे भूलने लगे हैं। इसकी वजह से वर्तमान सत्र की कक्षाओं में उन्हें सीखने में दिक्कत आ रही है। इसका सबसे ज्यादा असर बालिकाओं में देखने को मिल रहा है। ई–लर्निंग के दौरान लड़कियों के पीछे जाने का एक कारण यह भी है कि वे स्कूल न जाने के कारण घर के कामों में लगा दी जाती हैं। घर पर कंप्यूटर या पर्याप्त संख्या में मोबाइल न होने के कारण जहां ऑनलाइन पढ़ाई में लड़कों को लड़कियों पर प्राथमिकता दी जा रही है, वहीं कोरोना के कारण हुए आर्थिक तंगी के कारण लड़कियों की पढ़ाई छूटने का भी डर शामिल हो गया है। लॉकडाउन के दौरान ऑनलाइन क्लास का ठीक से न चल पाना, इंटरनेट और मोबाइल जैसी सुविधाओं का न होना और पढ़ाई के प्रति अरूचि ने छात्राओं को शिक्षा के लिहाज से पीछे धकेल दिया है। हाल यह है कि उन्हें भाषा और गणित में सबसे ज्यादा दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। शोध क्षेत्र में यह कहना है कि भाषा और गणित का बुनियादी कौशल ही दूसरे विषयों को पढ़ने का आधार बनता है।

कूटशब्दः सीधी जिला, कोविड–19, छात्राएँ, शिक्षा

1. प्रस्तावना
घर पर कंप्यूटर या पर्याप्त संख्या में मोबाइल ना होने के कारण जहां ऑनलाइन पढ़ाई में लड़कों को लड़कियों पर प्राथमिकता दी जा रही है, वहीं कोरोना के कारण हुए आर्थिक तंगी के कारण लड़कियों की पढ़ाई छूटने का भी डर शामिल हो गया है।

कोरोना महामारी का असर सिर्फ स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था पर ही नहीं पढ़ा है, बल्कि इसका प्रभाव जीवन के सभी क्षेत्रों पर है। हाल ही में जारी एक सर्वे रिपोर्ट के अनुसार कोरोना महामारी का शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ज्यादा ही असर पड़ा है। खासकर स्कूली लड़कियां इससे प्रभावित हो रही हैं। शिक्षा पर काम करने वाली संस्था राइट टू एजुकेशन फोरम (RTE Forum) ने सेंटर फॉर बजट एंड पॉलिसी स्टडीज (CBPS) और चौंपियंस फॉर गर्ल्स एजुकेशन (Champions for Girls' Education) के साथ मिलकर देश के 5 राज्यों में एक अध्ययन किया है, जिसके मुताबिक कोरोना के कारण स्कूली लड़कियों की पढ़ाई पर बहुत ही प्रतिकूल असर पड़ा है। घर पर कंप्यूटर या पर्याप्त संख्या में मोबाइल ना होने के कारण जहां ऑनलाइन पढ़ाई में लड़कों को लड़कियों पर प्राथमिकता दी जा रही है, वहीं कोरोना के कारण हुए आर्थिक तंगी के कारण लड़कियों की पढ़ाई छूटने का भी डर शामिल हो गया है।

'मैपिंग द इंपैक्ट ऑफ कोविड–19' नाम से हुआ यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के 11, बिहार के 8, असम के 5, दिल्ली के एक और तेलंगाना के 4 जिले के 3176 परिवारों में किया गया था। आर्थिक तौर पर कमजोर इन परिवारों से बातचीत के दौरान लगभग 70ः लोगों ने माना कि कोरोना लॉकडाउन के बाद उनके घर में आर्थिक तंगी हो गई है और उनके पास खाने को भी पर्याप्त नहीं बचा है। ऐसे हालात में बच्चों खासकर लड़कियों की पढ़ाई की जिम्मेदारी उठाने की स्थिति में ये परिवार नहीं हैं।

2. शोध शीर्षक में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण
- **स्कूली छात्राएँः** स्कूली छात्राओं से तात्पर्य विद्यालयीन स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं से है।
- **कोविड–19ः** कोरोना वायरस बीमारी (कोविड–19) एक संक्रामक बीमारी है जो SARS-CoV-2 वायरस की वजह से फैलती है.

- **शिक्षाः** शिक्षा से आशय यह है कि शिक्षा के स्तर एवं गुणवत्ता में विकास।
- **समीक्षात्मक अध्ययनः** कोरोना महामारी का असर सिर्फ स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था पर ही नहीं पढ़ा है, बल्कि इसका प्रभाव जीवन के सभी क्षेत्रों पर है। हाल ही में जारी एक सर्वे रिपोर्ट के अनुसार कोरोना महामारी का शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ज्यादा ही असर पड़ा है। खासकर स्कूली लड़कियां इससे ज्यादा प्रभावित हो रही हैं, का समीक्षात्मक अध्ययन करना है।

3. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

कोरोना की वजह से लगे लॉकडाउन का बच्चों की शक्षिा पर क्या असर हो रहा है, इससे जुड़ा सवाल राज्यसभा में 22 सितंबर 2020 को पूछा गया। इसके जवाब में केंद्रीय शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल ने बताया कि मंत्रालय ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (National Council of Educational Research and Training) या एनसीईआरटी के माध्यम से जुलाई 2020 में एक सर्वे कराया है। इस सर्वे में केंद्रीय विद्यालय संगठन, नवोदय विद्यालय समिति और सीबीएसई को शामिल किया गया।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री जिस सर्वे का जिक्र कर रहे हैं उसकी फाइंडग्सि Learning enhancement guidelines में शामिल की गई थीं। यह सर्वे 18,188 छात्रों, 3,543 टीचर्स, 253 प्राध्यापकों और 12,614 अभभिावकों पर किया गया था। इसमें कोरोना के बीच ऑनलाइन पढ़ाई में बाधा बनने वाले कारकों का जिक्र किया गया था।

जैसे– करीब 27 प्रतिशत छात्रों ने स्मार्टफोन और लैपटॉप न होने की बात कही। इसी तरह पढ़ने और पढ़ाने के बीच की रुकावटें, बिजली का न होना जैसी असुविधा के बारे में 28 प्रतिशत लोगों ने जिक्र किया। इसके अलावा खराब इंटरनेट, फोन या लैपटॉप के इस्तेमाल करने में दिक्कत के साथ ही अध्यापक और छात्रों के बीच होने वाले संवाद की कमी ने भी परेशानी खड़ी की।

प्रस्तुत शोध के महत्व का निर्धारण शोध हेतु पूर्व में सुनिश्चित किये गए उददेश्यों की प्रति पूर्ति पर आधारित है। इस दृष्टि से इस शोध कार्य के निम्नलिखित महत्व हैं :–

- शोध क्षेत्र में कोविड 19 के समय ई–लर्निंग के दौरान लड़कियों को घर के कामों में लगा दिया जाता है जिससे उनकी शैक्षिक गुणवत्ता की स्थिति ज्ञात हो सकेगी।
- शोध क्षेत्र में कोविड 19 के समय ई–लर्निंग से संबंधित सुविधाओं का अभाव होना शैक्षिक गुणवत्ता प्रभावित हुई है की स्थिति ज्ञात हो सकेगी।

4. उद्देश्य

- शोध क्षेत्र में कोविड 19 के समय ई–लर्निंग के दौरान लड़कियों को घर के कामों में लगा दिया जाता है जिससे उनकी शैक्षिक गुणवत्ता औसत से अधिक प्रभावित हो रही है, का अध्ययन करना।
- शोध क्षेत्र में कोविड 19 के समय ई–लर्निंग से संबंधित सुविधाओं का अभाव होना शैक्षिक गुणवत्ता प्रभावित हुई है, का अध्ययन करना।

5. शोध की परिकल्पनायें

1. शोध क्षेत्र में कोविड 19 के समय ई–लर्निंग के दौरान लड़कियों को घर के कामों में लगा दिया जाता है जिससे उनकी शैक्षिक गुणवत्ता औसत से अधिक प्रभावित हो रही है।
2. शोध क्षेत्र में कोविड 19 के समय ई–लर्निंग से संबंधित सुविधाओं का अभाव होना शैक्षिक गुणवत्ता प्रभावित हुई है।

6. शोध कार्य का परिसीमन व न्यादर्श

शोध समस्या के विस्तृत होने के कारण एवं समय की सीमा के कारण शोध क्षेत्र का परिसीमन निम्नानुसार किया गया हैः–

- **भौगोलिक परिसीमनः** समग्र का निर्धारण भौगोलिक सीमांकन के द्वारा ही संभव होता है। अतः इस प्रक्रिया को पूर्ण करने हेतु सीधी जिले के सभी विकासखण्ड की राजस्व तक परिसीमित किया गया है।
- **विषय वस्तु का परिसीमनः** शोधार्थी द्वारा द्वारा चयनित (विषय) सीधी जिले में स्कूली छात्राओं पर कारोना का प्रतिकूल प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन से संबंधित है।

न्यादर्श

शोध कार्य के न्यादर्श के रूप में सीधी जिले में स्कूली छात्राओं पर कारोना का प्रतिकूल प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन करने हेतु जिले से 20 विद्यालय से कक्षा 8वीं के 200 छात्राएँ, अभिभावको, शिक्षको एवं संस्था प्रमुखों का चयन निम्नानुसार किया गया है–

- संस्था प्रमुख/प्राचार्य –20 (10 शहरी एवं 10 ग्रामीण)
- शिक्षक संख्या –40 (प्रत्येक विद्यालय से 2–2 शिक्षक)
- अभिभावक संख्या –80 (प्रत्येक विद्यालय से संबंधित 4–4 अभिभावक)
- छात्राओं की संख्या – 200 (प्रत्येक विद्यालय से 10–10 छात्राएँ)

7. अध्ययन विधिः प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन हेतु निम्न विधियों का प्रयोग किया गया है–

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधिः** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साक्षात्कार विधि :** शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।

8. शोध उपकरण

शोधार्थी ने स्कूली छात्राओं पर कारोना का प्रतिकूल प्रभाव के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त करने हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया है।

9. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से कौल, लौकेश (1998)[1], तेवतिया, अनिल कुमार (2020)[2], गोयल एवं अन्य (2020)[3], पाठक, पी.डी. (1998)[4], अहमद, वसीम एवं अनिल कुमार (2020)[5] ने शोध विधि एवं स्कूली छात्राओं पर कारोना का प्रतिकूल प्रभाव से सम्बन्धित कार्य किये है।

10. सीधी जिले का सामान्य परिचय

सीधी जिला राज्य के उत्तर–पूर्वी सीमा पर 22'', 47''5' और 24.

42''10'' उत्तर अक्षांश और 81:18''40 और 82''48''30 पूर्व देशांतर के मध्य स्थित है। सीधी जिला रीवा संभाग के 4 जिलों में से एक है। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से सीधी की दूरी 632 कि०मी० है। वहीं संभागीय मुख्यालय से इसकी दूरी 80 कि०मी० है। यह जिला पूर्व–पश्चिम में 155 और उत्तर–दक्षिण में 95 कि०मी० क्षेत्र में फैला है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 10,532 कि०मी० है।

11. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, जो निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्रमांक – 01 के सन्दर्भ में: "शोध क्षेत्र में कोविड 19 के समय ई–लर्निंग के दौरान लड़कियों को घर के कामों में लगा दिया जाता है जिससे उनकी शैक्षिक गुणवत्ता औसत से अधिक प्रभावित हो रही है।"

सारणी क्रमांक 1: कोविड 19 के समय ई–लर्निंग के दौरान लड़कियों में शैक्षिक गुणवत्ता का अध्ययन

स. क्र.	अभिमतदाता	न्यादर्श मे चयनित संख्या	ई–लर्निंग के दौरान लड़कियों को घर के कामों में लगा दिया जाता है जिससे उनकी शैक्षिक गुणवत्ता औसत से अधिक प्रभावित हो रही है।					
			सहमत		आशिंक सहमत		असहमत	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	संस्थाप्रमुख	20	16	80.00	02	10.00	02	10.00
2.	शिक्षक	40	28	70.00	08	20.00	04	10.00
3.	अभिभावक	80	45	56.25	15	18.75	20	25.00
4.	छात्राएँ	200	130	65.00	40	20.00	30	15.00
योग		340	219	64.41	65	19.12	56	16.47

आरेख 1: कोविड 19 के समय ई–लर्निंग के दौरान लड़कियों में शैक्षिक गुणवत्ता का अध्ययन

विश्लेषण: उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि ई–लर्निंग के दौरान लड़कियों को घर के कामों में लगा दिया जाता है जिससे उनकी शैक्षिक गुणवत्ता औसत से अधिक प्रभावित हो रही है से 80.00 प्रतिशत संस्थाप्रमुख सहमत एवं 10.00 प्रतिशत आंशिक सहमत एवं 10.00 प्रतिशत असहमत है। शिक्षक 70.00 प्रतिशत सहमत एवं 20.00 प्रतिशत आंशिक सहमत और 10.00 प्रतिशत असहमत है। अभिभावक 56.25 प्रतिशत सहमत, 18.75 प्रतिशत आंशिक सहमत एवं 25.00 प्रतिशत असहमत है। छात्राएँ 65.00 प्रतिशत सहमत, 20.00 प्रतिशत आंशिक सहमत एवं 15.00 प्रतिशत असहमत है।

इस प्रकार ई–लर्निंग के दौरान लड़कियों को घर के कामों में लगा दिया जाता है जिससे उनकी शैक्षिक गुणवत्ता औसत से अधिक प्रभावित हो रही है से 64.41 प्रतिशत सहमत, 19.12 प्रतिशत आंशिक सहमत तथा 16.47 प्रतिशत असहमत है।

व्याख्या: अतः उक्त तालिका के विश्लेषण के आधार पर यह सिद्ध होता है कि ई–लर्निंग के दौरान लड़कियों को घर के कामों में लगा दिया जाता है जिससे उनकी शैक्षिक गुणवत्ता औसत से अधिक प्रभावित हो रही है।

अतः परिकल्पना क्रमांक 01 सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02 के सन्दर्भ में: "शोध क्षेत्र में कोविड 19 के समय ई–लर्निंग से संबंधित सुविधाओं का अभाव होना शैक्षिक गुणवत्ता प्रभावित हुई है।"

सारणी क्रमांक 2: कोविड 19 के समय ई–लर्निंग से संबंधित सुविधाओं का अभाव से शैक्षिक गुणवत्ता का अध्ययन

स.क्र.	अभिमतदाता	न्यादर्श मे चयनित संख्या	कोविड 19 के समय ई–लर्निंग से संबंधित सुविधाओं का अभाव होना शैक्षिक गुणवत्ता प्रभावित हुई है					
			सहमत		आशिंक सहमत		असहमत	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	संस्थाप्रमुख	20	18	90.00	01	05.00	01	5.00
2.	शिक्षक	40	30	75.00	06	15.00	04	10.00
3.	अभिभावक	80	62	77.50	10	12.50	08	10.00
4.	छात्राएँ	200	160	80.00	30	15.00	10	5.00
योग		340	268	78.82	49	14.41	23	6.76

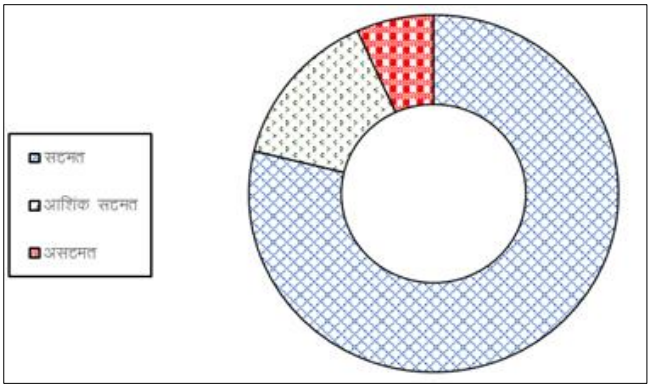

आरेख 2: कोविड 19 के समय ई–लर्निंग से संबंधित सुविधाओं का अभाव से शैक्षिक गुणवत्ता का अध्ययन

विश्लेषण: उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि कोविड 19 के समय ई–लर्निंग से संबंधित सुविधाओं का अभाव होना शैक्षिक गुणवत्ता प्रभावित हुई है संस्था प्रमुख 90.00 प्रतिशत सहमत, 5.00 प्रतिशत आंशिक सहमत एवं 5.00 प्रतिशत असहमत है, अभिभावक 77.50 प्रतिशत सहमत, 12.50 प्रतिशत आंशिक सहमत एवं केवल 10.00 प्रतिशत असहमत है, जबकि शिक्षक 75.00 प्रतिशत सहमत, 15.00 प्रतिशत आंशिक सहमत एवं 10.00 प्रतिशत असहमत है। छात्राएँ 80.00 प्रतिशत सहमत, 15.00 प्रतिशत आंशिक सहमत और 5.00 असहमत है।

इस प्रकार कोविड 19 के समय ई–लर्निंग से संबंधित सुविधाओं का अभाव होना शैक्षिक गुणवत्ता प्रभावित हुई है से 78.82 प्रतिशत सहमत, 14.41 प्रतिशत आंशिक सहमत तथा 6.76 प्रतिशत असहमत है।

व्याख्या: अतः उक्त तालिका के विश्लेषण के आधार पर यह सिद्ध होता है कि कोविड 19 के समय ई–लर्निंग से संबंधित सुविधाओं का अभाव होना शैक्षिक गुणवत्ता प्रभावित हुई है।

अतः परिकल्पना क्रमांक 02 सत्यापित होती है।

12. निष्कर्ष

शोध अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ई–लर्निंग के दौरान लड़कियों को घर के कामों में लगा दिया जाता है जिससे उनकी शैक्षिक गुणवत्ता औसत से अधिक प्रभावित हो रही है से 64.41 प्रतिशत सहमत, 19.12 प्रतिशत आंशिक सहमत तथा 16.47 प्रतिशत असहमत है। इसी प्रकार कोविड 19 के समय ई–लर्निंग से संबंधित सुविधाओं का अभाव होना शैक्षिक गुणवत्ता प्रभावित हुई है से 78.82 प्रतिशत सहमत, 14.41 प्रतिशत आंशिक सहमत तथा 6.76 प्रतिशत असहमत है।

13. सन्दर्भ ग्रंथ

1. कौल, लोकेशः शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि. नई दिल्ली, 1998.
2. तेवतिया, अनिल कुमार : दिल्ली के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों और शिक्षकों पर लॉकडाउन के प्रभाव का अध्ययन, भारतीय आधुनिक शिक्षा, 2020;4(1):23.29.
3. गोयल, के., पी. चौहान, के. छिकारा, पी. गुप्ता और एम.पी. सिंह : फियर ऑफ कोविड–19, फर्स्ट सुसाइडल केस इन इंडिया, एशिया जर्नल ऑफ साइकाइट्री, 2020;49:101989.
4. पाठक, पी.डी.: भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1998.
5. अहमद, वसीम एवं अनिल कुमार : कोरोना महामारी में ऑनलाइन शिक्षा की भूमिका, चुनौतियाँ और भविष्य एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, भारतीय आधुनिक शिक्षा, 2020;4(1):40.50.